



बुजुर्गों का ख्याल

बुजुर्गों का ख्याल रखें

उम्र बढ़ने के साथ हादसों का खतरा बढ़ता जाता है क्योंकि विटामिन और मिनरल की कमी के कारण हड्डियां कमजोर और आसानी से टूटने वाली हो जाती है। इससे फ्रेक्चर होने की आशंका बढ़ जाती है। सुनने और देखने की क्षमता भी कम हो जाती है। नसों के कमजोर होने से शरीर का संतुलन बनाए रखने में भी परेशानी आती है। इसलिए इस उम्र में विशेष सुरक्षा और सावधानी की जरूरत होती है।

- * सीढ़ियों पर पर्याप्त रोशनी रखें। सभी कमरों में पर्याप्त रोशनी हो। रात को नाइट लैंप जलाएं और बाथरूम में भी मद्धम रोशनी जलती रहने दें।
- * टॉयलेट और बाथ टब के पास दीवार में रेलिंग लगाएं ताकि घर के वरिष्ठ सदस्यों को उठकर खड़े होने में परेशानी न हो।
- * चश्मा, टेलीफोन और आपातकालीन नंबरों वाली डायरी उनके बेड के बिल्कुल पास वाली टेबल पर रखें।

कृष्ण मुरारी

कनिष्ठ अनुवादक/डी एन ई

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है

(जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

हिंदी का काम देश का काम है,
समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है

बाबूराम सकसेना



किरणें

हिरण बनी फिरती हैं किरणें,
खेत खेत में बिखरी हैं।
कुछ किरणें हैं बड़ी उद्यमी
पेड़ों पर जा निखरी हैं।

इन किरणों को छूकर फूली,
कलियां रंग रंगीली सी
एक अकेली कली तुमक कर
खिल आई कुछ नीली सी

नाच उठी हिरणों सी किरणें
लहरों पर उठ गिरकर
पर बालू पर चमचम चमचम
जैसे किरणें गईं ठहर

बहुत साहसी भी हैं किरणें
पहुंच पर्वत पर जाकर
सोना बना दिया चोटी को
झिलमिल झिलमिल मुस्कुरा कर

मेरे घर पर पूरी छत पर
छाई एक बिछौने—सी
फिर मुंडेर पर, फिर सीढ़ी पर
लगी उतरने छौने—सी

आंगन में आते आते यह
पूरे घर को जगा गईं
अंधियारा जो यहां वहां था,
बिना कहे ही भगा गईं।

शारदा
आरेखक ग्रेड-1
डी एन डी/एस डी जी

फागुन आयो रे

फूलों के मदमस्त मौसम में सजी,
तेरे सपनों की रंगोली ऐसे
ठिठोली तेरी चुलबली बातों की लिपटी,
भीगी कोई गोरी फागुन में जैसे।
नचा के नजर यूं निकला बगल से
हाथों में छिपाए गुलाल जाए कोई बाला बगल से
आते देख मुझे करने लगा बेगानों सी बातें
किसी साथी ने पकड़ लिया चोरी से जैसे
लोगों की भीड़ में देखना रूक—रूककर
बसंती हवा चले बगिया में जैसे थमथमकर
अचकचाकर जब तूने देखा शोखी से ऐसे
बरसी रंगों की बौछार सीमाएं तोड़कर

श्रीमती शशिबाला सजवान
डी एन आई पुस्तकालय

मैं आने वाले कल से नहीं
डरता, चूंकि मैंने बीता हुआ
कल देखा है, मैं आज की
चिन्ता करता हूं

ईसा मसीह



भक्त सूरदास की वात्सल्य सौन्दर्य चेतना

सूरदास की भक्ति में वात्सल्य के क्षेत्र में जहां तक भक्त सूरदास की नेत्रहीन होते हुए भी इनकी दृष्टि पहुंची वहां तक और किसी कवि की नहीं। इस क्षेत्र में तो इस महाकवि ने मानों औरों के लिए कुछ छोड़ा ही नहीं। सूरसागर में वात्सल्य के आलम्बन बालकृष्ण के सौन्दर्य की अनन्त छवियां भरी पड़ी हैं। प्रत्येक की अपनी विशेषता है। सूर ने वात्सल्य भाव पक्ष को इस रूप में प्रस्तुत किया है कि वे समष्टि रूप में बालकृष्ण की एक छवि को अंकित करते हैं और उनके सौन्दर्य के समग्र रूप को साकार बनाते हैं। वास्तव में प्रत्येक पद में बालकृष्ण के सौन्दर्य की ओर संकेत है।

श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं में जन्म, विविध संस्कार, पर्व-त्यौहार, शिशु से बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाएं, चेष्टाएं, बालक के मनोभाव, सखाओं के साथ विहार एवं क्रीड़ाएं सभी का विशद वर्णन सूरसागर में मिलता है। माता-पिता का वात्सल्य, उनके मनोभाव, ग्रामीण स्त्रियों का संस्कारों, पर्वों और लीलाओं में सम्मिलित होना, उनकी भावनात्मक प्रतिक्रियाएं, भाइयों की स्पर्धा, सखाओं के साथ वाद-विवाद आदि लीलाओं का वर्णन हुआ है। इनसे बालकृष्ण की सौन्दर्यात्मक छवियों में मनोवैज्ञानिक, मानवीय, पारिवारिक, ग्रामीण आयाम जुड़कर सौन्दर्यभावना में विविधता, स्वाभाविकता, सजीवता, गहराई आदि का समावेश होता है। विस्मय, उल्लास और हर्ष उस सौन्दर्यभावना के अभिन्न अंग हैं। वियोग की वेदना में भी सौन्दर्य और माधुर्य की अनुभूतियां सक्रिय रहती हैं। वे एक ओर वेदना को तीव्र और गहरी बनाती हैं तो दूसरी ओर उसमें सरसता का संचार करती हैं।

सूर ने बालकृष्ण के बाह्य सौन्दर्य और अंतःसौन्दर्य के साथ में भावना और कल्पना की क्रियाशीलता को जोड़कर प्रस्तुत किया है। सूर के बालकृष्ण का अपूर्व सौन्दर्य ऐसा है कि उसे किसी एक कोण से समझना और अंकित करना संभव नहीं है। कवि की भावना में कभी श्रीकृष्ण के सहज रूप का चित्र खींचा गया है तो कभी अलंकृत रूप का। इनका अलंकरण अति सुन्दर है। इस सौन्दर्य दर्शन के एक क्षण में जीवन सार्थक हो जाता है। सूर ने प्रत्येक अंग के सौन्दर्य का अनेक रूपों में वर्णन किया है। यह स्थितिशील रूप का सौन्दर्य है। सौन्दर्य अपना प्रभाव सब पर डालता है। वह अपने संगी-साथियों को सुन्दर बनाता है, उसके सम्पर्क में आने वाली सभी वस्तुओं को सुन्दर बनाता है तथा अपने परिसर को, प्रकृति को सौन्दर्य से भर देता है। श्रीकृष्ण ही नहीं, उनका सारा परिसर सौन्दर्यमय है—

सुन्दर स्याम सखा सब सुन्दर, सुन्दर वेष धरे
गोपाल
सुन्दर पथ, सुन्दर गति आवत सुन्दर मुरली सबद
रसाल
सुन्दर लोग सकल ब्रज सुन्दर सुन्दर हलधर सुन्दर
बाल
सुन्दर वचन विलोकनि सुन्दर सुन्दर गुन सुन्दर
बनमाल
सुन्दर गोप गाई अति सुन्दर सुन्दरिगन सब करति
विचार
सूर-स्याम संग सब सुख सुन्दर सुन्दर भक्त हेत
अवतार





इस सौन्दर्यमय परिवेश में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन हुआ है। लीलाएं स्थितिशील रूप को गतिशील सौन्दर्य प्रदान करती हैं। शिशुक्रीड़ा और बाललीला से माता यशोदा के मन में अनंत अभिलाषाएं जाग उठती हैं। शिशु सुलभ चेष्टाओं ने श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य को जो गतिशीलता प्रदान की है, उसके कारण रूप का आकर्षण अत्यन्त बढ़ गया है। श्रीकृष्ण के भोले स्वभाव का सौन्दर्य उसके वचनों और शिकायतों में प्रकट होता है तो राग—द्वेष और भय—क्रोध की भावात्मक प्रतिक्रिया में बालरूप और भी प्यारा हो जाता है। बालकृष्ण के धीरे—धीरे चलने के अभ्यास के ये चित्र हैं—

सिखवति चलन जसोदा मैया
अखराई कर पानि गहावत डगमगाई धरती धरै पैया
चलत देखि जसुमति सुख पावै
टुमकि—टुमकि धरनी पर रेंगत जननहिं खेल दिखावे

चलना सीखने की इस प्रक्रिया में ही पता नहीं कितने गतिशील चित्र भरे पड़े हैं— रेंगना, घुटनों के बल चलना, उठना—गिरना आदि।

घुटरूनि चलत स्याम मनि—आंगन, मातु—पिता दौड़ देखत री

कबहुंक किलक तात—मुखहेरत, कबहुंमात—मुख देखत री
कबहुंक दोरि घुटरूवनि लपकत, गिरत उठत पुनिधावै री
इततै, नन्द बुलाइ लेत हैं उततै जननि बुलावै री
दम्पति होड़ करत आपस में स्याम खिलौना कीन्हों री

श्रीकृष्ण के लिए यह माता—पिता को अपनी ओर आकृष्ट करने की क्रीड़ा है, तो माता—पिता के लिए शिशु एक खिलौना है। इस प्रकार श्रीकृष्ण सौन्दर्य के अवतार हैं तो सूर के लीलावर्णन में वह सौन्दर्य मूर्तिमान हो उठा है। श्रीकृष्ण की लीलाएं लौकिक सामाजिक क्रिया व्यापारों से भिन्न अपने में एक रहस्यमय सौन्दर्य को लिए हुई हैं। सूर ने उस सौन्दर्य को पहचानकर उसे भाववादी चरम सीमा पर पहुंचा दिया है। सूर ने कृष्ण के बाहरी सौन्दर्य के अतिरिक्त प्रत्येक पद में आन्तरिक सौन्दर्य की ओर संकेत किया है। यह आंतरिक सौन्दर्य व्यक्त रूप के माध्यम से प्रकट होता है।

गौरी शंकर पात्रो
वरिष्ठ अनुवादक
डी एन ई

संत ज्ञानेश्वर एक बाग के पास से गुजर रहे थे। माली को पौधों को पानी देते देखकर वे अपने शिष्यों से बोले— “क्या तुम लोग इस पानी की विशेषता जानते हो?” शिष्यों ने अपनी अनभिज्ञता जाहिर करी। संत ज्ञानेश्वर बोले— “ये पानी अपनी इच्छा के बगैर काम करता है। माली इसको जिस पौधे पर डाल देता है वहां जाता है। हमें अपना जीवन माली के पानी की तरह बना लेना चाहिए। अपनी सब कामनाओं, आकांक्षाओं व समस्याओं को माली रूपी भगवान के हाथों सौंप देने में अलग ही आनन्द है।” शिष्यों को उनके कथन का गूढ़ मर्म समझ में आ गया।



नारी

नारी जो जानी जाती है
त्याग और बलिदान से
कहा जाता है उसे ढलने को
वह तो पैदा हुई जग का दुःख ताप हरने को
उसका स्वतंत्र अस्तित्व है निमिष मात्र
नारी मानो एक पतंग सी
बिंध कर नाक कान बांधी जाती
अदृश्य मर्यादा की डोर से
परायों के सहारे दिया जाता है सौंप
फिर कहा जाता है, भरो तुम उड़ान
मैना सी फड़फड़ाती गिरती उठती
दिखाती दम, भरती उड़ान
फिर खींच कर डोरी, काट कर पंख
दिया जाता उपदेश सीमित रखो ये उड़ान ऊंचाई मांगेंगी बलिदान
नारी जानी जाती है त्याग और बलिदान से
नारी मानो एक बूंद सी
जो नहीं जानती अपना भविष्य
छोड़ पिता का घर बंध रीति रिवाजों की डोर से
बूंद सदृश्य ही जाती पिया के घर
जो नितांत अन्जान है उसके लिए
समझाया जाता है इसी में है जीवन की सार्थकता
उसका स्वतंत्र अस्तित्व है निमिष मात्र
किन्तु हर बूंद की तकदीर अलग होती है
कोई बन जाती है मोती किसी सीप में छिपकर
कोई कीचड़ में पड़ी रोती है
टूटना बूंद को कभी खलता नहीं
अगर हर बूंद को घर सीप सा मिलता
अगर हर बूंद को घर सीप सा मिलता



सरिता राणा
वरिष्ठ प्रारूपकार
डी जी एन ए आई



तू आगे को बढ़ता चल

जगमगाता मस्त मलंग "दिनकर" तुझको जगा रहा,
नई छटाएं नया सवेरा देख तुझको बुला रहा
झर-झर, झिम-झिम झरनों से आई सुहानी सी कल-कल
तू आगे को बढ़ता चल, उठ तू आगे को बढ़ता चल।

भूल पुरानी बात, ये बातें काम आती हैं नहीं
थाम ले हथियार कि यूं ही जंग, जीती जाती है नहीं
चाहे हो हथियार कंटीला या हो फूल सा कोमल
तू आगे को बढ़ता चल, उठ, तू आगे को बढ़ता चल।

थक हार कर के बैठ जाना, तू नहीं लिखाकर आया था,
तुझको पैदा कर कुदरत ने अपना मान बढ़ाया था
क्यों तू हुआ कठोर पत्थर सा तुझे बनाया था मलमल
तू आगे को बढ़ता चल, उठ, तू आगे को बढ़ता चल।

रूप यौवन माया तुझको, हर पल ही भरमाएगी,
तुझे चुरा कर तुझसे ही वो, झांसा देकर जाएगी
तेजी इसमें तीर कमां से, और दामिनी सी चपल
तू आगे को बढ़ता चल, उठ, तू आगे को बढ़ता चल।

देख रे पगले विकसित तुझमें होने लगा संसार तथा,
रग-रग में बिजली सी कौंधी जोश का हुआ संचार नया
मिला तुझे वरदान ए प्यारे, न होगा अब तू विफल
तू आगे को बढ़ता चल, उठ, तू आगे को बढ़ता चल।

मोहित श्रीवास्तव

सहायक

डी सी पी एस (नौसेना)





सदाचरण सफलता की कुंजी है सदाचरण का पालन करने हेतु 24 जांच बिन्दु

1. सदा सत्य पर आरुढ़ रहें।
2. अपने कर्तव्यों से कभी विमुख न हों।
3. आध्यात्मिक ग्रंथों के स्वाध्याय में कभी आलस्य न करें।
4. अपने गुरुजनों एवं महात्माओं को अपनी नेक कमाई में से कुछ भाग जरूर दें।
5. अपने नित्य-नैतिक धार्मिक कृत्यों के साथ ही गृहस्थ जीवन का भलीभांति पालन करें।
6. सत्य के मार्ग से कभी विचलित न हों।
7. अनेक रुकावटों के बावजूद भी अपने धर्म और कर्तव्यों को निभाते चलें।
8. शुभ कामों से कभी न चूकें।
9. उन्नति के साधनों को अपनाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहें।
10. वेद, उपनिषद, दर्शन एवं गीता के पढ़ने-पढ़ाने में पूरी रुचि लें एवं इनके उपदेशों को अपने जीवन में ढालें।
11. यज्ञादि सुकर्मों एवं जनसाधारण के सेवा कार्यों को भी जीवन में उचित स्थान अवश्य दें।
12. भावी पीढ़ी के समुचित विकास के लिए उनके माता-पिता तथा पड़ोसियों से पूर्व सहयोग प्राप्त करें।
13. अपने सहयोगियों तथा अभ्यागतों के साथ अपना व्यवहार मैत्रीपूर्ण रखें।
14. शास्त्रोचित एवं अनिन्द्य सत्कर्मों का ही सदा आचरण करना चाहिए, इससे भिन्न नहीं।
15. समाज के सभी व्यक्तियों के उत्तम आचरणों का ही सदा अनुसरण करें, उनके दोषों का नहीं।
16. अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों का सदा यथोचित सम्मान करें।
17. अपनी शक्ति के अनुसार सुपात्र को उदारतापूर्वक एवं सामर्थ्यनुसार दान जरूर देते रहना चाहिए।
18. सांसारिक पदार्थों का भोग त्याग बुद्धि से ही करें।
19. यदि तुम्हें कभी किसी कार्य के बारे में संदेह पैदा हो जाए तो इसका निर्णय ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियों से करवाएं जो उत्तम विचार वाले हों, परामर्श देने में कुशल एवं निपुण हों, अपने कार्यों में निष्ठावान व सदाचारी हों, विनीत एवं धर्मात्मा हों।
20. यदि किसी निकम्मे आदमी के साथ व्यवहार करने में आपको संदेह हो जाए तो इस विषय में यह देखें कि उसके साथ सदाचारी एवं धर्मात्मा महापुरुष कैसा बर्ताव करते हैं।
21. संक्षेप में- यही शास्त्र की आज्ञा हैं, यही वेद का रहस्य है, यही परम्परागत शिक्षा है।
22. सदाचारी एवं धर्मात्मा महापुरुष जैसा भी बर्ताव करें, आप भी उनके साथ वैसा ही बर्ताव करें।
23. इसी का स्वयं आचरण करना चाहिए।
24. अपने सहयोगियों को भी इसी की शिक्षा देनी चाहिए।

लोकेश प्रसाद

कनिष्ठ अनुवादक, डी एन ई



जुगाड़

यार कैसे भी करके मेरा बाहर जाने का जुगाड़ कर
और साथ ही पासपोर्ट बनवाने का जुगाड़ कर।

सुना है उसकी पहुंच बहुत दूर तक है
ले दे के मुझे लगवाने का जुगाड़ कर।

लोन तो मिल रहा है मगर बहुत कम
एजेंट या मैनेजर से बढ़ाने का जुगाड़ कर।

गांव की बरात है आने जाने का साधन नहीं
कोई ट्रैक्टर या ट्राली से जाने का जुगाड़ कर।

बहुत दिनों बाद बैठे हैं हम साथ मिलकर
आज यार कुछ पीने-पिलाने का जुगाड़ कर।

यार तेरा साहब इतने बड़े दफ्तर में है
कहीं कहकर नौकरी लगवाने का जुगाड़ कर।

यार उस गरीब की बेटी की शादी है
उसे कुछ पैसे दिलाने का जुगाड़ कर।

ये पूरी दुनिया ही जुगाड़ से चलती है "गजब"
तू फिर एक नई कविता बनाने का जुगाड़ कर।

राम चरण

चपरासी

डी ओ एच (नौसेना)

हम कहां आ गए

पथ भूलकर भटके हुए हम हैं परेशान से
बहुत दूर आ गए हम अपने मकान से,
परमात्मा से अलग हुए तो आत्मा बने,
अब देह बनकर आ गिरे हैं आसमान से।

ये इन्द्रियां लुभा के हमें ले गईं जाने किधर,
वंचित कर दिया हमें अमृत वाणी के ज्ञान से,
जो सत्य भी नहीं और नित्य भी नहीं,
अब पराये से हो गए अपने संसार से,

भोगों ने लिप्त किया है, हमको इस कदर,
हम भूल गए मूल्य जो, मूल्यवान थे,
आवागमन के चक्र से हम, छूटेंगे तभी
निष्काम कर्म करेंगे, जब इत्मीनान से

अजय कुमार

वरिष्ठ आरेखक (यांत्रिकी)

डी एन डी (एस एस जी)

आलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रममित्रस्य कुतः सुखम्॥

आलसी मनुष्य को विद्या नहीं मिलती और जो
विद्या से हीन है, उसे धन नहीं मिलता। निर्धन
का कोई मित्र नहीं होता और जिसके मित्र
नहीं है वह सुखी नहीं होता।



अच्छा खाएंगे तो अच्छा महसूस करेंगे

मसाले— हमें ऐसे मसाले खाने चाहिए जो पित्त को संतुलित रखे जिनकी तासीर ठंडी हो मसलन सौंफ। इसे माउथ फ्रेशनर की तरह खा सकते हैं। इसी तरह से एलोवेरा जूस पीने से भी शरीर और दिमाग ठंडा रहता है। लहसुन भी यही काम करता है। खाने में लहसुन का इस्तेमाल करना चाहिए।

ग्रीन टी— दिन में दो कप ग्रीन टी पीजिए। इससे आपका दिमाग एकदम ठीक रहेगा। ग्रीन टी दिमाग के लिए इतनी फायदेमंद है कि यह पार्किंसन जैसी बीमारी से भी बचाती है। ग्रीन टी पीने से मूड हमेशा अच्छा बना रहता है यानि घबराहट, चिड़चिड़ेपन या गुस्से से भी बचाती है।

पानी— रोज आठ गिलास पानी पीने से आपकी दिमागी सेहत भी ठीक रहती है। हमारे दिमाग का 80 प्रतिशत हिस्सा पानी का बना होता है। इसलिए दिमाग को ठीक से काम करने के लिए दूसरे पौष्टिक तत्वों की तरह ही पानी की जरूरत होती है। अमूमन गर्मी में सिरदर्द की शिकायत इसलिए भी होती है क्योंकि हम पानी ठीक से नहीं पीते हैं।

धनिया और पोदीना— सलाद में आप धनिया का इस्तेमाल कर सकते हैं, तो पोदीना की चटनी बनाकर खा सकते हैं। ये दोनों आपके शरीर और दिमाग को ठंडक पहुंचाते हैं।

पानी वाली सब्जियां और फल— इस मौसम में भी आप हर समय उत्साह या उमंग में डूबे रहना चाहते हैं तो पानी वाली सब्जियों और फलों को अपनी खुराक में शामिल कीजिए। ऐसी सब्जियों में पालक सबसे अहम है। पालक में मौजूद विटामिन 'बी' और फोलिक एसिड दिमाग में मौजूद एक रसायन सेरटोनिन को संतुलित मात्रा में बनाए रखते हैं जिससे इंसान अच्छा और पोजिटिव महसूस करता है। इसी तरह फलों में तरबूज का सेवन आप जितना ज्यादा करें उतना बेहतर है।

खुशबू का असर— हमारी फिटनेस में कई बार खुशबू भी खास किरदार निभाती है। हर खुशबू हमें ताजगी का अहसास कराती है जिससे हमारा मूड फ्रेश रहता है और दिमाग भी शांत और खुश रहता है। लेकिन गर्मी के मौसम में इंसान के दिमाग के लिए नारियल की खुशबू सबसे ज्यादा अच्छी मानी जाती है। यह तनाव से दूर रखती है। हल्केपन का अहसास कराती है। इसीलिए बेहतर होगा कि अपने घर, गाड़ी या ऑफिस में कोकोनट स्प्रे का हल्का सा छिड़काव करें। अगर हो सके तो ऐसे साबुन से नहाएं जिसमें कोकोनट एसेंस हो ताकि कोकोनट की महक आपके साथ दिन भर बनी रहे।

वकील प्रसाद

सहायक

डी एन ई

अगर गुरु ही अहंकार के चलते गलत राह पर चलने लगे तो उसे दंड देना जरूरी हो जाता है।

बाल्मीकि





हिन्दी पखवाड़ा 2011 के पुरस्कार विजेता

वर्ष 2011 के लिए राजभाषा चल वैजयंती के विजेता निदेशालय

- प्रथम स्थान : डी एल एस
द्वितीय स्थान : डी जी एन ए आई
तृतीय स्थान : डी सी सी एम

एकीकृत मुख्यालय (नौसेना) में हिन्दी में सबसे अधिक नोटिंग-ड्राफिटिंग करने के लिए वर्ष 2010-11 के प्रथम पुरस्कार विजेता-

नाम व पदनाम	निदेशालय	पुरस्कार की राशि
श्रीमती सुषमा प्रभाकर प्रारूपकार-I	डी जी एन ए आई	1000/-
श्री कर्णपाल, अवर श्रेणी लिपिक	डी एल एस	1000/-

वर्ष 2011 के हिन्दी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रथम पुरस्कार विजेता।

प्रतियोगिता का नाम	विजेता का नाम व पदनाम	निदेशालय
1. हिन्दी निबंध	लेफिट कमांडर भूपेन्द्र सिंह हिन्दी भाषी लेफिट कमांडर आई एस कुमार अहिन्दी भाषी	डी एन डी डी टी पी
2. नोटिंग-ड्राफिटिंग	श्री बिहारी लाल, एसडीओ-I हिन्दी भाषी श्रीमती एन मल्लिका, सहायक अहिन्दी भाषी	डी एन डी (एस एस जी) डी एन पी
3. वाद-विवाद	श्री जे के एम शर्मा, सी पी ओ हिन्दी भाषी श्री भानुगोपाल सरकार, प्र.श्रे.लि. अहिन्दी भाषी	सी एन एस सचिवालय डी डब्ल्यू ई
4. काव्य-पाठ	श्री बलराम सिंह त्यागी, एम सी पी ओ हिन्दी भाषी सुश्री ए गीतिका, रूसी अनुवाद अधिकारी अहिन्दी भाषी	डी जी एम एस आर टी सी, गोदीवाड़ा

सभी पुरस्कार विजेताओं को नौसेना शिक्षा निदेशालय की ओर से बधाई



हिन्दी पखवाड़ा 2011 की प्रतियोगिताओं के कुछ पुरस्कार विजेता



हिन्दी पखवाड़ा 2011 की प्रतियोगिताओं के कुछ पुरस्कार विजेता



हिन्दी पखवाड़ा 2011 की प्रतियोगिताओं के कुछ पुरस्कार विजेता

